eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2021

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours 70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

Downloaded from eduresourceza.com

IEB Copyright © 2021

Downloaded from eduresourceza.com

भाग क

निम्नलिखित चार प्रशनों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

प्रशन एक

१.१ कविता: सत्ता

१.१.१ सत्ता का संदेश क्या है ?

कविता सत्ता में कवि का संदेश यह है की लोग सत्ता पाने के लिए इतनी लालची हो गए कि वह देश की वासियों को भी परवाह नहीं । सत्ता के लिए लोग पागल हो जाते । लोग तड़प रहे है , मर रहे है लेकिन इसका कोई प्रभाव नहीं । मासूम, निर्दोश लोग अपने जीवन गवा रहे है सिर्फ़ इस युध के लिए । खून का रंग एक ही है, लाल, तो इसका अर्थ है कि जो धर्म लोग से आते हर व्यक्ति इनसान है और खून का रंग एक है । हम सब एक है और किसी की जान लेने की कोई अधिकार नहीं ।

१.१.२ "पृथ्वी माँ और हम उसके पुत्र है" ? अपने शब्दों में समझाए ।

पृथ्वी यानी की धरती माँ, हम उसकी पूजा करते है । धरती को हम अपना आदर करते है । उसपर हम जनम लेते है और पूरी जीवन इसकी गोड़ में पालती हैं । इसलिए पृथ्वी को हम अपनी माँ की तरह पूजते है और हम सब उसके बच्चे हैं । पृथ्वी पर सब कुछ जनम लेते है क्योंकी पृथ्वी हमको प्राण देते है । प्रकृति, माँ है और हम उनके संतान की तरह उनके सारे नीयम निभाते है या थोड़ते है ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

१.१.३ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए ।
"पाँच हज़ार साल............फिर से न खोएँ"

भारत उनके संस्कृति और परंपराओं पाँच हज़ार सालों के लिए गर्व से निभाई । अब ये एक सवाल रहे गए । भारत में सत्ता के लिए एक दूसरे को मार रहे । ये कैसा देश है जो अपने लोग को पीठ से मारते है सिघंहासन के लिए । सबको स्वार्थी हो गए और एक दूसरे के ऊपर रहना चाहता । इसी तरह भारत फ़िर से अपना आज़ादी विदेशियों से गवा देंगे । अपने आप लडने से, हम अपनी माँ (देश) को बेच दिया । एक दूसरे के खून पीना चाहते है । हमने एकता गवा दिया । एक परिवार की तरह नहीं रह सकते क्योंकी हम सब एक जिन्दगी की दौड़ में हैं ।

१.२ कविता: किरण

१.२.१ इस विश्व में किरण का महत्व क्या है ? कविता के अनुसार में लिखिए ।

कवि कहता है कि किरण जिन्दगी लाती है । हर किरण जनम लेती है अंधेरे को भगाती है । किरण वो धूप है जो गरमी लाती, खुशियाँ भी लाती है । किरण हमेशा हमारे सामने होती है, परन्तु हम उसके आदर और प्राथना नहीं करते । हम भूल जाते हैं । अगर किरण विश्व पर उजियाली देती तो सबको जीवन मिलते है । कवि का संदेशहै कि किरण का अस्थिवा हम कभी भूल जाते है । जब किरण बाहर नहीं आते तब हम उसके अनुपरिस्थिति एहसास होते है । किरण प्रकृति को बढाते है । किरण हमारे साथ ही काम करते है । जब किरण सो जाते है तब हम भी सोको है । किरण का काम है लोगों के दिल को बहलाने के लिए फिर चले जाते ।

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2021

Downloaded from eduresourceza.com

१.२.२ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए ।
"कर रही हो तुम किसको मधुर, किसे दिखलाती प्रेम-निकेत"

जब किरण बाहर निकलते है तो वह खेलना चाहती है । वह गरमी धूप से लोगों के गालों चूमते है । ये है उसके खेल । किरण एक बच्चे की तरह लुपा चुपी खेलले है । इन पंक्तियों में कवि किरण से पूछते है कि किस के लिए वह प्रेम दिखाती । किरण उसका काम कभी नहीं भूलते है, परन्तु हम अपना काम भूलते है किरण को हर सुब्ह नमन करने के लिए ।

१.२.३ कविता "किरण" से निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में समझाए।
"सुमन मंदिर के खोलो द्वार, जगे फिर सोया वहाँ बसन्त"

भारत में इतने सारे धर्म और संस्कृति है कि यह एक गर्व की बात है । परन्तु जव देश की वासियों इस सुन्दरता को नष्ट करते है तब ये दुख की बात है । मंदिरों भारत में उनके लोगों के लिए एक बहुत बड़ शान हैं ।
कभी-कभी जब किसी की पूजा अन्त अपने देश कोहोते तो यह एक हार है । इसी तरह मीठी बाँसुरी के धुन भी अन्त होते । बाँसुरी की आवाज़ चुप हो जाते । जब ऐसी सुन्दर पल अन्त होते तो जीने की वजह भी खतम होते । यह विश्व अनजान बनते है और प्रकृति वैसे ही अनदेखी बन जाते है ।

१.२.४ कवि क्यों बार-बार कविता में प्रशन पूछते है ?

प्रकृति अपने आप के लिए बात नहीं कर सकते । कवि सबको सवाल पूछते है उनको याद दिलाने के लिए । उनके प्रशन हमे सोच में डालते है कि किरण भी जीवन का दान है ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

प्रशन दो

निम्नलिखित दों प्रशनों में से किन्हीं एक के पूछे गये प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए:

२.१ **कहानी: प्रतिज्ञा**

देश में इतनी बड़ी संकट आ गए । कहानी के अनुसार वर्णन कीजिए क्या हो रहा था ?

देश में घोर अकाल पड़ा हुआ था। साल भर से पानी की बूंद भी नहीं पड़ी थी। खेतों में धूल उड़ती थी। घास तक जल गयी थी, न कहीं अन्न था और न जल। लोग वृक्षों की छालें कूट - कूट कर खाते थे। अर्धरात्रि दोपहर के समान तप्त रहती है और दोपहर को भूमि से अग्नि की ज्वाला निकलती थी। पूरे देश में हा - हाकार मचा हुआ था। लोगों के हृदय शुष्क हो गए थे। कोई किसी की सुधि लेनेवाला न था। सबके सब अपनी - अपनी विपत्ति में बावले हो रहे थे। इंद्र की आराधना नित्य होती थी। लोग देवस्थानों में जमा हो जाते हैं - रोते और विलाप करते थे, परचित देवताओं में दया, वात्सल्य का लोप हो गया था; न पूजा - पाठ ही से कोई उपकार होता था, न यज्ञ और त्याग से। ज्योतिषियों के द्वारों पर सदा भीड़ लगी रहती थी। एक वैज्ञानिक महाशय ने वैज्ञानिक साधनों से मेघों को आकर्षित करने का <u>उद्योग</u> किया; पर परिक्षेपण तटस्थ रूप में हुआ। इंद्रदेव न पसीजे, पानी न बरसा और प्रजा की अवस्था प्रतिक्षण पतनती गई।

अन्त में एक दिन लाखों हिन्दू प्रजा एकत्र होकर देश के बड़े महात्मा बाबा दुर्लभदास की सेवा में पहुँची और उनके द्वार पर, गले पड़ जाने वालों की तरह, जा बैठी। मुस्लिम प्रजा ने मौलाना शेख आबिद अली का दामन पकड़ा। दोनों महात्माओं के हृदयों में दया उत्पन्न हुई। बाबा दुर्लभदास ने पूरे देश के साधु - सन्तों को निमन्त्रित किया। औलिया आबिद अली ने मुल्लाओं और पीरों के पास कासिद प्रस्थान किया। एक सप्ताह में चारों दिशाओं से साधुगण और मुल्ला लोग आकर जमा हो गए। भिन्न - भिन्न सम्प्रदायों के सहस्रों की सन्त पुरुषों ने पदार्पण किया। मुल्लाओं के झुण्ड - के - झुण्ड विराजमान हुए।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

धर्मज्ञ, ईश्वर - भक्त और सिद्ध पुरुषों का ऐसा विलक्षण समागम कभी देखने में नहीं आया था।

इनमें से प्रत्येक महात्मा अपने - अपने चमत्कारों और अलौकिक उपहारों लिए प्रसिद्ध था। लोगों को विश्वास था कि ये से अगर एक भी सिद्ध पुरुष मन से इच्छा करेगा, इन्द्र की शक्ति नहीं कि उस सिद्ध की आज्ञा भंग हो सकती है

अथवा

२.२ **कहानी: प्रतिज्ञा**

२.२.१ राजा पृथ्वीपाल सिंघ किस तरह का मनुष्य था ?

राजा पृथ्वीपाल सिंह एक दुश्चरित्र मनुष्य थे। अपने भोग - विलास के सिवा और कोई काम न था। महीनों रनिवास से बाहर न निकलते थे। नृत्य, गान और आमोद - प्रमोद की सदा अधिकता रही थी। पूरे देश के भाँड़, भड़वे, लुग और लफ़ंगे उनके साथ थे। नित्य कई तरह की शराबें मँगाई जाती थीं। नित्य - नूतन पुष्टिकारक भोजन बनाए जाते थे। उन्हें कविता से प्रेम था; लेकिन केवल उसी कविता से जिससे विषय - वासनाओं को उत्तेजना मिलती है। वे स्वयं दादरे और ठुमरियाँ रचते थे और बहुधा नशे में मस्त होकर वेश्याओं के साथ नाच लेता था। उन्हें अब तक इस घोर दुर्भिक्ष की खबर न थी। उनके मन्त्रीगण भी स्वार्थ - सेवी थे - देश की मूल दशा को उनसे छिपाए रखने में वे अपना उपकार समझते थे। देश में चाहे कोई विपत्ति हो; लेकिन राज्य - दरबार के लिए रुपया कहीं - न - कहीं से निकल ही आते थे।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

२.२.२ हिन्दु प्रजा ने क्या किया ?

प्रजा की यह धार्मिक स्थिति थी कि राज्य - व्यवहार में वह कुछ हस्तक्षेप कर सकता था? वह राजा से उदासीन हो रहा था। जो विपत्ति आ पड़ती थी वह उसे झेलती थी; पर राजा की विलास - शान्ति को स्पष्ट करने का दुस्साहस न कर सकता था।

२.२.३ प्रतिज्ञा का अर्थ क्या है ?

प्रतिज्ञ का अर्थ है इंतज़ार किसी के लिए या किसी वस्तु के लिए । हम सिर्फ़ महत्व वस्तु के लिए प्रतिज्ञा करते हैं । लक्षय पूरा होने से प्रतिज्ञा अन्त होते । अगर प्रतिज्ञा न होती तो हम भविष्य में तरक्खी नहीं कर सकते । प्रतिदिन हम किसी ना किसी चीज़ की प्रतिज्ञा करते है । प्रतिज्ञा के बिना हम कामयाबी नहीं पा सकते ।

२.२.४ इस कहानी में देश की वासियों ने क्या प्रतिज्ञा की ?

देश की वासियो ने बारिश की प्रतिज्ञा की। साल भर से पानी की बूढे नहीं पड़ी थी। सूखे सूखे हो गए थे। जल और भोजन भी नहीं मिला। लोग वृक्षों की हालें साते तोर। दोपहर में भी धरती से गरमी निकलती थी लोग पागलों की तरह इश्वर से रोते रहेक खुद पानी के लिए। इंद्रदेव के लिए लोग पानी साल भर के लिए नित्य भी की। एक साल के लिए पानी के बिना लोगों के हालात भिगड़ती चली गई। पानी जीवन के लिए इतनी महत्व है कि उसके बिना जीवन असम्भव है । बारिश के बिना किसानों के खेतों पर पानी नहीं मिलते तो खाना भी नहीं मिलते ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

२.२.५ लोग क्यों राजा का दर्शन करने गए ?

किंतु जब महात्मा दुर्लभदास ने स्पष्ट कर कहा कि उनके संकट का निवारण राजा के सिवा और किसी से न होगा, तब लोग विवश होकर राजभवन के सामने, मैदान में, जमा हो गए और जान पर खेलकर उच्च स्वर से दुहाई मानोने लगे। द्वारपालों और सैनिकों ने उन्हें वहाँ से बलात् हटाना चाहा, डाँटा, मारने की धमकी दी; पर इस समय लोग प्राण --प्रिंटन करने पर रजत थे। वे किसी भाँति वहाँ से न टले। उनका आर्तनाद प्रतिक्षण बढ़ जाता है, यहाँ तक कि राजा के प्रमोदोल्लास में विघ्न हो गए हैं

२.२.६ कहानी के अन्त में क्या हुआ था ? वर्णन कीजिए ।

बादल फिर गरजने लगे और जल - बिंदु पृथ्वी पर गिरने लगे। राजकुमार मान भक्ति, श्रद्धा, आनन्द और अनुराग से लम्पट होकर राजा की ओर दौड़े और उनके चरणों पर गिर पड़े। राजा अभी तक मूर्ति के समान स्थिर खड़े थे। उनके मुख की कालिमा धुल - धुल कर बही जाती थी। उनका दिव्य स्वरूप श्याम छ से इस प्रकार उदित होता है, जैसे बादलों में से चाँद निकलता है। उनके प्रमुख पर इस समय एक अलौकिक प्रतिभा थी और नेत्रों से आत्मोत्सर्ग की ज्योति निकल रही थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि मुख की यह कालिमा अब ईश्वर की दया - दृष्टि से ही धुलेगी और यह प्रतिज्ञा पूरी हुई, क्योंकि उनमें दृढ़ता थी, आत्महत्या थी और परमात्मा की दीन बन्धुता पर पूर्ण - पूर्ण विश्वास था। देश कभी इतना उल्लसित, बहुत सुखी और इतना गौरव रत्नमत्त न हुआ था।

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2021

Downloaded from eduresourceza.com

प्रशन तीन

निम्नलिखित दो प्रशनों में से किन्हीं एक पूछे गए प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

३.१ **कहानी: पाँच मिनट**

कहानी के अनुसार पाँच मिनट का महत्व चर्चा कीजिए ।

जीवन में पाँच मिनट बट कम समय लगता है, लेकिन उस समय में बहुत कुछ कर सकता है। की खून हो सकी राह में चलते - किसी के गहने या पैसे भी चोरी हो सकते हैं। कभी - कभी पाँच मिनट लंबी होती है और कभी बहुत कम समय। अगर हम खुश है तो समय जल्दी चले जाते हैं और अगर ध्य उदास है या किसी मुगिल में है, तो समय होता है। समय बहुत धीरे - धीरे कहानी "पांच मिनट में पान प्रकाश की जिंदगी में अंधेरा छा जाएगा"। ये जैलर का कैदियों से मिलना। उनके परिवार या वाकील उनके मिलने वाले जेल जाते हैं। प्रकाश के लिए वह पांच मिनट का जीवन के सबसे जिवमती पांच मिनट था। वह उस पाँच मिनट की फिर नहीं मिलेंगे। वह परसों फाँसी पा जाएगा। कल मुझे एक पत्र मिला - सरकार मेरा पति मुझसे मिलनेक़ात करना चाहता है - अन्तिम मुलाक़ात। उसकी अंतरिम इच्छा है - अपने बच्चों को देखोगे, स्त्री को देखोगे। मैं अपने पति के अंतरिम दर्शन करने गई। अपने प्राणेश्वर की जीवित अवस्था को देखने। मैं जिसे देखने गया उसके सम्बन्ध में यह जानती थी कि उसके सिर पर काल की छाया पड़ गई है, उसके गले के लिए रस्सी बट चुकी है, उसके लिए कफ़न ख़रीदा जा रहा है; हमारी वह आज जीवित है, हमारी और आपकी तरह - आश्चर्य! आप सोचिये - आपकी सबसे ज्यादा प्रिय काल का ग्रास बना बैठा है, आप उसे देखने जाते हैं। आज जिसे आप देख रहे हैं, कल सुबह उसकी लाश आपको मिल जाएगी, जिसका गला रस्सी के फन्दे से घोंट डाला गया है। मैं क़ानून को दोषी नहीं ठहराता, मैं न्याय पर आक्रमण

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2021

Downloaded from eduresourceza.com

नहीं करता, पर मनुष्यता से पूछती हूँ- "बोलो बहिन, एक बार बोलो! न्याय मूक है, बधिर है, अन्ध है, उसके सामने जिसने उपस्थित किया वह होगा!"

अथवा

३.२ **कहानी: पाँच मिनट**

३.२.१ गोपाल के बाबूजी क्यों जैल गए ?

ऊन्हे बहुत सारे अप्रद की है। उसने चोरियाँ की डाका डाला मटा - मारा सब कुछ किया और अब जेल में एक साथ सभी अप्राद के कारण, वह फांसी का फंदा पर लटक जाएगी। खन्ना किसी अप्राद के लिए बहुत सक्त सजा खून की देता है

३.२.२ वह इतने सारे अप्राध क्यों की ?

प्रकाश और उनके परिवार बद्रीबंद थे। अपने परिवार को सम्भालने के लिए वह यह सब कुछ करना पडा। यह अप्राध ने अपने परिवार के पेट पालने के लिए किया। गरीबी ने उसे इतना तेज किया की वह बिना सोचे ये यब गलत काम करती। बच्चे के हर इच्छा पुरा करने के लिए उसने खून भी लगाया।

३.२.३ वह क्यों पत्नी से अन्तिम मुलाकात करना चाहता था ?

वह फाँसी लगने जा रहे थे। कुछ दिन में वह दुनिया में नहीं रहेगा। वह अपनी पत्नी को रखना चाहता था। उसके पार ज्यादा समय नहीं है। आकरी बार परिवार को देखना चाहता। उसकी पत्नी को कहना चाहता की वह और साल रुकना चाहता अपने बच्चे के लिए। वह अपनी पत्नी को हिम्मत देना चाहता बच्चे को सम्भालने के लिए। वह जानते थे की समाज उनके पत्नी को शान्ति में नहीं रहने देंगे।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

३.२.४ गोपाल ने अपने बाबूजी से क्या उमीद रखा ?

गोपाल की उम्मी थी कि उसका बाबूजी वापस आयेंगे। वे जैल जाना बाबूजी को अपने साथ लायेंगे। वह छोटा बच्चा नहीं जानता था कि कोई को जेल से आसानी से वापस नहीं आ सकता। बाबूजी उसके लिए साईकल लायेंगे। मुन्नी को अपना साईकल को छूने नहीं दंगा। वह सोचता है कि जीवन पहले की तरह होगा। बहुत दुख की बात है कि बडे को गलत काम करते और छोटे को दुख और जुडाई को सहना होगा।

३.२.५ गोपाल की माँ ने क्यों कहा कि वह पति नहीं मिलेंगे ?

वह गुस्से था। शायद उनमें अंतिम समय देखकर गबराना नहीं करेंगे क्योंकी वह जानती थी कि उसका पति निर्दोश नहीं था। शायद उसे बड़ा दुख मिला जीवन में वह सोच रहा था कि कैसे उनके बिना दुष्ट मनुष्य उनको अभाग्य नारी कहलायेंगे। पति को अपनी स्त्री का आज्ञाकारी है। पत्नी को कहते है कि वह क्यों ईश्वर को पुकारे, वह अपने दुर्भागय को पुकारते है।

३.२.६ निम्नलिखित वाक्य को अपने शब्दों में समझाए ।

३.२.६.१ “न्याय मुक है, बधिर है, अन्धे है, उसके सामने जिसे उपस्थित किया जायेगा वह उसकी परीक्षा कर लेगा ।

कान बोल नहीं सुन नहीं सकते सम्ले, देख नहीं कर सकते जो भी सामने खाडे हो उसे भकती पहता है

३.२.६.२ “वह दरिद्र है, आभागा है, पर है मनुष्य“ ।

वह गरीब है, माग्यली न्ट 'के साथ था लेकिन वह इनसान था। जो भी वह जीवन में किया अपने परिवार के लिए किया। लोगों को करत अनजाने में। सब करते हैं। उसके बदनसीबी के कारण उसने जीवन नष्ट कर दिया।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

३.२.७ इस कहानी में पाँच मिनट का अर्थ क्या है ?

इस कहानी में पांच मिनट "का अर्थ है। जैलर का समय कैदियों से मिलने के लिए वह पांच मिनट जीवन के सबसे कीमती पांच मिनट था। वह पांच मिनट को फिर नहीं मिलेंगे। उस समय वह अपना सबसे कीमती पाँच मिनट मिला अपना परिवार को बातें बतीने के लिए ।

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2021

Downloaded from eduresourceza.com

प्रशन चार

निम्नलिखित नाटक "मैं और केवल मैं" से किन्हीं एक के पूछे गये प्रशनों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

नाटक: मैं और केवल मैं

४.१ यह नाटक कहाँ स्थापित किया गया ?

आपका उत्तर का सिद्ध कीजिए ।

अंग्रेजी टॉमसन के दफ्तर में कई भारतीय काम करते हैं। एक है मिस्टर खन्ना, जो चापलूसी द्वारा उसका प्रियप्पन गया है। उस्यके सदियों कि से संशोधित लेने की ताक में रहता है। वही दफ्तर में एक अन्य कर्मचारी रामेश्वर है।

४.२ निम्नलिखित पात्रों का चरित्र वर्णन कीजिए ।

४.२.१ रामेश्वर

टॉमसन कैदपत्तर में वह फाइमैनदार कर्मचारी अपनी उसले रामेश्वर - मैं और केवल मैं एकांनी में रामेश्वर प्रमुख (गुलम) पारे। नामेवारीको तट असेता। घर में उसकी अनिश्चित बीमार है फिर भी वह नहीं लेती है। दफर को अन्य लोमा प्रकार की बातें करते हैं, फिर भी वह अपना २ से नहीं टिलता। वह अपना दुख भी दूर नहीं काला है ।। पाने पर उदासी का कारण सरूप में बता देता है। रामेशर एक वर्तिकापुरायण / कायाशील व्यक्ति है। डॉ ने बीमा पत्नी को एक - दो दिन नी मेहमानों को बताया। इसका माधोट्टा रीम है। माँ - बच्चे को देखभाल करने के लिए कोई नहीं है, दि भी अपने काम पूरा करने के लिए वह दफ्तर जला लेग उसे अटी लेने को कहता है, लेकिन वह सोचती है कि दपतर का काम बिगड़ेगा। अपना काम खुद ही करना चाहते हैं, इस छुट्टी नहीं लेता है और अपना तनय का पालन करता है। वह एक आदर्शवादी सिद्धांतवादी) पुरुष है। किसी पर नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता है। उनहन पाप पालन करने के कारण, दफ्तर मे

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

सब उस पर विश्वास रखता है। दपतर के अन्य लोग जानते हैं कि यदि रामेश्वर खन्ना के विरुद्ध अफसर से करें तो खन्ना को जरूर हटा दिया जाए। रामेश्वर कृष्णचंद्र से कह देता है कि मैं किसी पर चोट नहीं पहुंचा सकता हूं। मैं कोई काम नहीं करूंगा जो अपने स्वार्थ के लिए किसीर पर नुकसान पड्याते है, वे आदमी नहीं टोते। रामेचर टन: सच्चा आदर्श पुरुष है।

४.२.२ कृष्णाचन्द्र

"मैं और केवल में पानी में कृष्णचन्द्र पर मेया पात्र हैं, जो हमेशा अपने स्वार्थ का विचार करता है। अंग्रेजी, टॉमसन के विरोधी दफ्तर में रामेश्वर और सन्ना के साथ काम करते हैं। वह सन्ना के (अय्यस्ट) है। रामेश्वर के किए से। वह खन्ना को नगरी से निकलवाना चाहती है। लेविन आदर्शवादी रामेश्वर उसकी बातों में नहीं आता। कभी वारण वह रामरस से नाराज़ है और उसकी किसी बातों पर ध्यान नहीं देता। ध्ख तात में वह केवल अपने स्वयं का विचार करता है। पतर में आने वाली टी। वह काम करने के बदले शमेश्वर के पाटर बैठ जाता है रामेश्वर अपनी बीमार पत्नी की बात करता है। कृष्णचंद्र का बहनोई बड़ा डाक्टर है। रामेश्वर अपनी पत्नी को उसे दिखान की बात करता है। लेकिन कृष्णचंद्र उसकी एक भी बात - ध्यान न करता केवल खन्ना के लिए। शिकायत करने पर रहत है। वह चाहती है कि रामेश्वर टॉमसन से कटकर खन्ना कोलेट दे। कृष्णचंद्र दूसरों का नाशा करने में भी संकोच नहीं करता। वह रामेश्वर से कहता है कि आज टॉमसन खन्ना से नाराज है, अच्छा मौका है। टॉमसन आपको बहुत परेशान करेगा। मानत है, इसलिए तुम उसे अलग कर देने को कह दो। रामेश्वर स्पष्ट कर देता है की वह ऐसी किसी पर इलजाम कभी नहीं डालेंगे ।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

४.३ खन्ना किस तरह का पुरुष था ?

खन्ना अपने साथियों पर बहुत रोब जमा था टॉमसन को अपना वश में कर रखा है। वह उस से जो चार - करखा लेता है। इससे सारा दफ्तर उससे डरता है। अशोकन भी दपलर में उसका कोई मिन नहीं है। साथ काम कर बदला से संशोधित लेने की ताक में रहते हैं। जब उन्हें मालूम पता है कि टॉमसन खन्ना से नाराज है, तो व रामेश्वर को खन्ना की शिकायत करने भेजना चाहते हैं।) लेकिन आदर्श कक्ष रामेछबर स्पष्ट इनकार कर देता है और कहता है, कि मैं किसी पर चोट करता हूँ या नुकसान नहीं कर रहा हूँ। अपने स्वार्थ के लिए खन्ना परमानन्द को नौकरी से निकल केता है। उसे कोई ठंड नहीं है कि परमानन्द के परिवार के नौ लोग भूखें मरेंगे। इस में एक बूढी माँ भी हैं। इसी कारण दफ्तर में काम करने वाला, कृष्णचन्द्र उस के कंसलन्ध बहुत स्वभाव रखता है। वह कहता है कि यदि नौकरी पर निर्भर न हो तो वह खन्ना को इतने में स्यमय तक टिकने नहीं देता। लाचार होन के कारण वह कुछ भी नहीं कर सकता था।

४.४ नाटक की कहानी संक्षेप में लिखिए

अंग्रजी टॉमसन के दफ्तर में कई भारतीय काम करते है जो चापलूसी द्वारा उसका प्रिप्पन कनारा। उसके सदियों ने उसे लेनकी ताक में बदल दिया है। उसी दफ्तर में एक अन्य कर्मचारी रामेश्वर है य में १० - पीना अस्चा और बहुत बीमार पत्नी है। इसी करण व डास बैठा तो में कृष्णचन्द्र आकर लगता है। कक्षा ४, कि खन्ना को निकलता है न छोड़ा होना नाम कृष्णचन्द्र नहीं है। रामवर अपने ही विचारों में उत्स है, इसलिए ध्यान नहीं देता है। तब सोनीशंकर आकर सम्मान के उदास टोने का कारण पूछता है। वह अपने बीमार टीवी ओम बच्चे के बारे में बताता है। कृष्णचंद्र से कहा है कि बाद बहनोई नगर के मश्टर डॉटर हैं - मैं उन्हें दिखाता हूं कि कृष्णचंद्र को कोई ध्यान नहीं देता है। वही अन्य देवनारायण अ है। उसके पूछने पर रामेशवर मी उसे अपने दुख की बात कहता है - एक करके सन रामेश्वर के दुख की ला सुनते हैं, पर किसी ने उस पर ध्यान नहीं देता है। तब कृष्णचन्द्र रबर से कछा कि यदि वह (रामेश्वर)

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

टॉमसन साहब संकट तोव खन्ना: जरूर देग। रामेश्वर स्पष्ट कर देता है कि किसी भी अनिष्ट नहीं करेगा। वे माराज़ ये कर चले आते हैं। देवनारायण आकर, रामेश्वर को कुछ दिनों के घंटी बंकर आराम करने को कटता है। चपटासी मा आकर रानवर तमदीदी (हमदर्दी) दिखाती है। देवनारायण सनाचार देता है खन्ना के करने से टॉमसन ने परमानंद को डिमिसक यह सुनकर रामेश्वर पागल जैसे बन जाता है। उसी समय आता है कि रामेश्वर का बेटा, मोहन, दो न जाने वाला स्वरूपकार गया और इस घटना के कारण पत्नी भी मर गई। राशर लगता है कि उसके लिए अब सब समाप हो गए हैं। मी स वॉट्स टॉमसन और खन्ना आते हैं। रानेचर उन्हें परमानन्द डिमिस करने पर बुरा - भला कहा है। खन्ना टॉनसन से 3 डिमिस करने को कहता है। टॉमसन शमेशर को समझा.

४.५ “मैं और केवल मैं“ एकांकी में खन्ना का चरित्रना आदर्शवादी और ना नेक पुरुष था, बल्कि एक बेइमान स्वार्थी आदमी था । इस पर प्रकाश डालिए ।

बल्किमाईमा मैं और केवल में एकांकी में सांप का चिट्ठा ना आदर्शवादी से उसका प्रिय पान चला गया है।] अक्क विस्द • यदि कोई शिकार कर रहा है, तो बैट अफसर से करवार उस्य निकलवा देता है। में से कुछ प्रमुख है, और खन्ना इसी भाग में से एक है। स्वाध्यायी पुरुष धी। अंग्रजी तंमसन का दफ्तर में कई भारतीय काम करते हैं। इन पतर में वह कुछ काम नहीं करता है। टॉमसन की आर्कलूसी के खन्ना अपने साथियों पर बहत रोग टॉमसन को अपना वश में कर रखा है। वह उस से जो चार है करता है लेता है। इससे सारा दफ्तर उस्य से उखा है। इसी कारण भी दपलर में उसका कोई मिन नहीं है। सथ काम कर बाल उस से संशोधित लेने की ताक में रहते हैं। जब झाड़े॑ मालूम होते हैं कि टॉमसन खन्ना से नाराज़ है, तो व रामवर को सन्ना की शिकायत करने भेजना चाहते हैं।

Downloaded from eduresourceza.com

Downloaded from eduresourceza.com

लेकिन आदर्शवत् रामेश्वर स्पष्ट इनकार कर देता है और कहता है कि किसी पर चोट या नुकसान नहीं पहुंच सकता। अपने स्वार्ध के लिए खन्ना परमानन्द को नौकरी से निकलन देता है। उसे कोई ठंड नहीं है कि परमानन्द के परिवार के नों लोग भूखें करेंगे। इसमें एक बुढ़ी माता भी हैं। इसी कारण दपतर में काम करने वाला, कृष्णचन्द्र उस के संबन्ध बहत खराब माव रखता है। वह कहता है कि यदि नौकरी पर निर्भर न हो तो वह खन्ना को इतने लं समय तक टिकने नहीं देता। लाचार होन के कारण वह कुछ भी नहीं कर सकता था। खन्ना में एक भी अच्छा गुण नहीं है। जब रामेश्वर उन्हें परमानन्द को निकलान के बारे में सामना करता है, तो वहटॉमसन से उलटा रामेछतर की शिकायत करता है। पक्षपात के कारण टॉमसन खन्ना के नाते सुनकर रामेश्वर को भी नोकरी से निकाल देता है। दुःख से घिरा हुआ निस्सताय रामवर को लगता है कि अब सन कुछ समाप्त हो गया है। टोश से बाहर वह खन्ना का गला फाड़कर टुजा देता है। समाज में खन्ना जया स्वाधी लोग अनक है। आर्कलूसी, पक्षण बेईमानी दसरों पर रोज जमाना, दूसरों का अनिष्ट नुकसान करना - उनके लिए स्वस्तिक है। एसे लोगों से मिल - जूनियरकर रहने का वातावरण निगड़ जाते हैं।

Total: 70 marks

Downloaded from eduresourceza.com
IEB Copyright © 2021